संख्या-172/2023/3569/22-2-2022-17(1474)/2022

प्रेषक,

सुरेश कुमार पाण्डेय,
विशेष सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

पुलिस महानिदेशक/ महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाएं,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 लखनऊ दिनांक 27 अप्रैल, 2023

विषय:- केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी वीरपाल पुत्र श्री कन्हैया, निवासी जनपद-आगरा की फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक वरिष्ठ अधीक्षक (मु0) कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाएं उ0प्र0, लखनऊ के पत्र संख्या-34619/प्रोबेशन-3-फार्म-ए/(एम-14-09-2022) दिनांक-02-11-2022 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी वीरपाल पुत्र श्री कन्हैया, जो ग्राम-बुर्ज पैंत खेड़ा, थाना-खन्दौली, जनपद-आगरा का निवासी है। जमाव के सामान्य उद्देश्य की पूर्ति को लेकर दिनांक 08.05.2003 को बन्दी ने अपने 10 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर देशी तमंचों से गोली मारकर 03 व्यक्तियों की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को (1) सत्र परीक्षण संख्या-529/2003 में भा0द0वि0 की धारा-452, 148, 307/149, 302/149 में मा0 न्यायालय, अपर सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या-01, आगरा के आदेश दिनांक 01.12.2004 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया। (2) सत्र परीक्षण संख्या-820/2003 में भा0द0वि0 की धारा-147, 323/149, 307/149, 504, 506 में मा0 न्यायालय, अपर सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या-02, आगरा के आदेश दिनांक 25.03.2011 द्वारा 07 वर्ष के कारावास एवं (3) सत्र परीक्षण संख्या-153/2004 में धारा-2/3 गैंगेस्टर एक्ट में मा0 न्यायालय, विशेष न्यायाधीश (गैंगेस्टर एक्ट), आगरा के आदेश दिनांक 06.05.2017 द्वारा 09 वर्ष के कारावास से दण्डित किया गया। मा0 उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के आदेश दिनांक 21.01.2008 द्वारा आजीवन कारावास की सजा को यथावत रखा गया। बन्दी द्वारा दिनांक 15.05.2022 तक 18 वर्ष, 11 माह, 26 दिन की अपरिहार सजा तथा 23 वर्ष, 05 माह, 18 दिन की सपरिहार सजा पूरी कर ली है।

जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट, आगरा द्वारा मा0 उच्चतम न्यायालय द्वारा निदिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में बन्दी का अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में नहीं होने, पुन: अपराध करने में अशक्त नहीं होने, जेल में आगे और निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने की आख्या अंकित करते हुए समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है।

प्रोबेशन बोर्ड का अभिमत है कि जमाव के सामान्य उद्देश्य की पूर्ति को लेकर दिनांक 08.05.2003 को बन्दी ने अपने 10 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर देशी तमंचों से गोली मारकर 03 व्यक्तियों की हत्या करने का जघन्य अपराध किया गया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी द्वारा कारित अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में नहीं होने, पुन: अपराध करने में अशक्त नहीं होने का अंकन जनपदीय अधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में किया गया है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता, जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा निर्दिष्ट 05

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.gov.in से सत्यापित की जा सकती है ।

बिन्दुओं की आख्या में समयपूर्व रिहाई का विरोध किये जाने के दृष्टिगत प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट-1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी वीरपाल पुत्र श्री कन्हैया को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

3- अत: उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी वीरपाल (बन्दी संख्या-10272) पुत्र श्री कन्हैया, निवासी जनपद-आगरा को यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत फार्म-ए के आधार पर मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की फार्म-ए/लाइसेन्स पर मुक्ति सम्यक् विचारोपरान्त राज्यपाल महोदया द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तद्नुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतदद्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।
(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

सुरेश कुमार पाण्डेय
विशेष सचिव।

संख्या-172/2023/3569(1)/22-2-2022 तद्दिनांक...

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, आगरा।
2- वरिष्ठ अधीक्षक, केन्द्रीय कारागार, आगरा।
3- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग, उ0प्र0 को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।
4- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग, उ0प्र0 को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।
5- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,
कृष्ण कुमार सिंह
उप सचिव।

http://shasanadesh.up.gov.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.gov.in से सत्यापित की जा सकती है ।

**शासनादेश संख्या-172/2023/3569/22-2-2022-17(1474)/2022**

**दिनांक 27 अप्रैल, 2023 का संलग्नक**

**सरकार के आदेश**

केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी वीरपाल पुत्र श्री कन्हैया, जो ग्राम-बुर्ज पैंत खेड़ा, थाना-खन्दौली, जनपद-आगरा का निवासी है। जमाव के सामान्य उद्देश्य की पूर्ति को लेकर दिनांक 08.05.2003 को बन्दी ने अपने 10 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर देशी तमंचों से गोली मारकर 03 व्यक्तियों की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को (1) सत्र परीक्षण संख्या-529/2003 में भा0द0वि0 की धारा-452, 148, 307/149, 302/149 में मा0 न्यायालय, अपर सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या-01, आगरा के आदेश दिनांक 01.12.2004 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया। (2) सत्र परीक्षण संख्या-820/2003 में भा0द0वि0 की धारा-147, 323/149, 307/149, 504, 506 में मा0 न्यायालय, अपर सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या-02, आगरा के आदेश दिनांक 25.03.2011 द्वारा 07 वर्ष के कारावास एवं (3) सत्र परीक्षण संख्या-153/2004 में धारा-2/3 गैंगेस्टर एक्ट में मा0 न्यायालय, विशेष न्यायाधीश (गैंगेस्टर एक्ट), आगरा के आदेश दिनांक 06.05.2017 द्वारा 09 वर्ष के कारावास से दण्डित किया गया। मा0 उच्च न्यायालय, इलाहाबाद के आदेश दिनांक 21.01.2008 द्वारा आजीवन कारावास की सजा को यथावत रखा गया। बन्दी द्वारा दिनांक 15.05.2022 तक 18 वर्ष, 11 माह, 26 दिन की अपरिहार सजा तथा 23 वर्ष, 05 माह, 18 दिन की सपरिहार सजा पूरी कर ली है।

जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट, आगरा द्वारा मा0 उच्चतम न्यायालय द्वारा निदिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में बन्दी का अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में नहीं होने, पुन: अपराध करने में अशक्त नहीं होने, जेल में आगे और निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने की आख्या अंकित करते हुए समयपूर्व रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है।

प्रोबेशन बोर्ड का अभिमत है कि जमाव के सामान्य उद्देश्य की पूर्ति को लेकर दिनांक 08.05.2003 को बन्दी ने अपने 10 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर देशी तमंचों से गोली मारकर 03 व्यक्तियों की हत्या करने का जघन्य अपराध किया गया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी द्वारा कारित अपराध व्यक्ति विशेष तक सीमित अपराध की श्रेणी में नहीं होने, पुन: अपराध करने में अशक्त नहीं होने का अंकन जनपदीय अधिकारियों द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में किया गया है। इस प्रकार बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता, जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में समयपूर्व रिहाई का विरोध किये जाने के दृष्टिगत प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट-1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी वीरपाल पुत्र श्री कन्हैया को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है।

उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त राज्यपाल महोदया द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार कर दी गयी है।

सुरेश कुमार पाण्डेय
विशेष सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.gov.in से सत्यापित की जा सकती है ।